ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 30-32
ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

जनपद-आजमगढ़ (उ0प्र0) के समन्वित विकास में आधारभूत अधः संरचनात्मक तत्व में संचार व्यवस्था

भोलेन्द्र प्रताप सिंह

असि0 प्रोफे0, भूगोल विभाग, पी0जी0 कालेज, गाजीपुर, (उ0प्र0) भारत

Received- 22 .10. 2018, Revised- 29 .10. 2018, Accepted - 05-11-2018 E-mail: ak4197004@gmail.com

सारांश– *आधारभूत अध : संरचनात्मक तत्व किसी क्षेत्र की अर्थव्यवस्था के विकास हेतु अनिवार्य पदार्थ, परिस्थितियां एवं व्यवस्थाएं होते है। अध : संरचनात्मक तत्वों के अन्तर्गत किसी देश समुदाय एवं संगठन के उन्नति हेतु आधारभूत सुविधाएं, साधन, सेवाएं एवं व्यवस्थाऐं सम्मिलित होती है। वास्तव में अध : संरचानात्मक तत्व एक समूह बोधक तत्व है, जिसमें किसी भी उद्यम में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सहायक सभी आर्थिक–सामाजिक एवं सांस्कृतिक तत्वों, व्यवस्थाओं, सुविधाओं तथा स्रोतों को शामिल किया जाता है। किसी प्रदेश या क्षेत्र की अर्थव्यवस्था, उनके विकास प्रक्रिया की गति तथा वर्तमान विकास का भू–वैन्यासिक प्रतिरूप सामान्यतः इन्ही तत्वों पर आधारित होता है। विभिन्न विद्वानों द्वारा अधः संरचनात्मक तत्वों के लिए अवस्थापनात्मक, अव–संरचनात्मक, आधारित संरचनात्मक, सामाजिक उपरिपूंजी व आर्थिक उपरिपूंजी जैसे शब्दों का प्रयोग करते हुए इसके अन्तर्गत आने वाले तत्वों की लगभग एक दूसरे से मिलती हुई व्यवस्था दी है।*

मुख्य शब्दः अवस्थपनात्मक, अव–संरचनात्मक, उपरिपूंजी, अधः संरचनात्मक, औद्योगिक दक्षता, समुच्चयिक विकास

ग्रीनवाल्ड (1973)1 ने संरचनात्मक तत्वों का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के परिपेक्ष्य में विश्लेषण करते हुए इन्हें राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की नींव कहा है जिसपर आर्थिक क्रिया–कलाप यथा– कृषि उद्योग तथा व्यापार आदि की स्थिति, उत्पादन एवं उत्पादित पदार्थ का संचरण आदि निर्भर करते है, इन तत्वों के अभाव में विकास प्रक्रिया सम्भव नहीं होती है। ग्रीनवाल्ड ने अध : संरचनात्मक तत्वों के अन्तर्गत मुख्यतः परिवहन एवं संचार तन्त्र, ऊर्जा सम्बन्धी सुविधाओं एवं सार्वजनिक सेवाओं को सम्मिलित किया है तथा आर्थिक क्रिया–कलाप को प्रभावित करने वाले अप्रत्यक्ष तत्वों यथा– जनसंख्या का शैक्षणिक स्तर, सामाजिक आचार–व्यवहार, औद्योगिक दक्षता एवं प्रशासनिक अनुभव को भी इसके अन्तर्गत सम्मिलित किया है। वर्शफील्ड ने अध : संरचनात्मक तत्वों के अन्तर्गत बांधों, शक्ति केन्द्रों, सड़को, रेलमार्गो, बन्दगाहों, हवाई अड्डो तथा संचार सुविधाऐं सम्मिलित की है। रामबरन (1986)2 ने परिवहन तथा संचार व्यवस्था, संचालन शक्ति, स्वास्थ्य सेवाऐं एवं रिहायशी मकान को प्रमुख अधः संरचनात्मक तत्व मानते हुए इसके अन्तर्गत सरकारी क्षेत्र की सड़के, रेल मार्ग, पुल, मकान, स्कूल जलाशय आदि को भी सम्मिलित करने का सुझाव दिया है। इनके अनुसार किसी अर्थव्यवस्था में जितनी ही श्रेष्ठ आधारित संरचना होगी उतनी ही कुशल रूप से आर्थिक क्रियाओं को चलाया जा सकता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि किसी प्रदेश या क्षेत्र में अधः संरचनात्मक तत्वों की पर्याप्त उपलब्धता समान वितरण, उनका समुच्चयिक विकास एवं सम्यक् उपयोग, प्रादेशिक समस्याओं के निराकरण, विकास प्रक्रिया की इच्छित गति एवं दिशा तथा स्थानीय विषमताओं के न्यूनीकरण के लिए नितांत आवश्यक है।

अधः संरचनात्मक तत्वों की विशेषताएं – अधः संरचनात्मक तत्वों की समान्यत विशेषताओं को निम्न रूपों में देखा जा सकता है–

1. अधः संरचनात्मक तत्वों में लगी हुई पूंजी अचल होती है। 2. अवस्थापनात्मक तत्वों में अविभाज्यता का तत्व अधिक पाया जाता है अर्थात् अधिकांश अधः संरचनात्मक तत्वों का निर्माण छोट–छोटे खण्डों में नहीं हो पाता है। 3. अधः संरचनात्मक तत्वों का प्रतिस्थापन असली में सम्भव नहीं होता है। 4. एक अधः संरचनात्मक तत्व के अनके कार्यो के लिए उपयोगी होता है।

संचार सुविधाएं – परिवहन की तरह संचार भी किसी क्षेत्र के विकास की दिशा सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विकसित संचार व्यवस्था ने विश्व के एक स्थान से दूसरे स्थान के बीच की दूरियों को घटा दिया है। संचार विशेषज्ञों के अनुसार – पहले से पिछड़े देश वे थे, जहाँ औद्योगिक क्रान्ति नहीं हुई थी और भविष्य के पिछड़ें देश वे होंगे, जो संचार क्रान्ति से अछूते रह जायेंगे।3। वर्तमान समय में इन लोगों की अवधारणा निष्पक्ष रूप से सत्य है क्योंकि आज संचार के साधन एक धन है एक शक्ति है। संचार माध्यमों से मानव ने समय और दूरी की अवधारणा परिवर्तित हो गई है। भारत जैसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था वाले देशों में ग्रामीण संचार व्यवस्था का पर्याप्त महत्व है, फिर

अनुरूपी लेखक

भी देश में संचार व्यवस्था को सुदृढ़ आधार नहीं प्राप्त हो सका है।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ विभिन्न संचार के माध्यमों से ई–प्रगति का विवरण तालिका संख्या 01 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या – 01

जनपद आजमगढ़ : संचार सुविधाओं में प्रगति

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1.	1981	500	55	—	1296
2.	1985	541	55	20	1897
3.	1991	395	22	105	1527
4.	1995	395	23	634	3686
5.	2001	406	23	3679	26909
6.	2005	406	04	4028	40242

तालिका संख्या – 02

जनपद आजमगढ़ : संचार सुविधाओं का वितरण, वर्ष 2004–05

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
1. अतरौलिया	16	0	85	739
2. कोयलसा	14	1	118	1103
3. अहिरौला	18	0	113	912
4. महाराजगंज	19	0	88	593
5. हरैया	22	0	112	615
6. विलरियागंज	20	0	116	1487
7. अजमतगढ़	27	0	120	836
8. तहबरपुर	13	0	89	589
9. मिर्जापुर	17	0	116	598
10. मोहम्मदपुर	16	0	110	893
11. रानी की सराय	18	0	123	954
12. पल्हनी	28	0	98	1499
13. सठियाँव	12	0	93	597
14. जहानागंज	17	0	92	680
15. पवई	15	0	106	623
16. फूलपुर	14	0	108	1573
17. मार्टीनगंज	21	0	86	498
18. ठेकमा	18	0	101	715
19. लालगंज	21	0	112	1379
20. मेनगर	15	0	72	561
21. तरवां	15	0	46	460
22. पल्हना	8	0	39	364
[illegible]	[illegible]	1	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	4	[illegible]	[illegible]

तालिका संख्या 01 के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनपद में डाकघर और तारघर की संख्या में विभिन्न वर्षो से ह्रास व वृद्धि सहित परिवर्तन जारी है, जबकि पी0सी0ओ0 और टेलिफोन कनेक्शन की संख्या में लगातार वृद्धि हुई। जनपद में विकासखण्ड स्तर पर संचार सुविधाओं के वितरण में असमानता मिलती है, जिसका विवरण तालिका संख्या 02 से स्पष्ट है।

तालिका संख्या 02 के अवलोकन से स्पष्ट है कि जनपद आजमगढ़ में संचार सुविधाओं के वितरण में असमानता मिलती है। जनपद में वर्ष 2004–05 के आंकड़ों के आधार पर डाकघरों की कुल संख्या 406 में से 384 ग्रामीण क्षेत्र में और 22 नगरीय क्षेत्र में मिलते है। जनपद में 2143 पी0सी0ओ0 केन्द्र ग्रामीण क्षेत्र में और 1885 नगरीय क्षेत्र में मौजूद है।

जनपद में टेलीफोन कनेक्शनों की कुल संख्या 40242 में से 18128 ग्रामीण क्षेत्र में और 22114 नगरीय क्षेत्र में कार्यरत है। विकासखण्ड स्तर पर डाकघरों की सबसे अधिक संख्या पल्हनी (28) विकासखण्ड में और सबसे कम पल्हना (8) विकासखण्ड में मिलती है। इसी प्रकार पी0सी0ओ0 और टेलीफोन कनेक्शनों की सबसे अधिक संख्या क्रमशः रानी की सराय (123) फूलपुर (1565) में तथा सबसे कम संख्या क्रमशः पल्हना (39) व पल्हनी (264) में ही मिलती है।

ISSN NO.-2347-2944
Vol.-9, No.-I, Issues-X YEAR- June -2018

तारघर – अध्ययन क्षेत्र में तारघर की संख्या 04 है इनमें से एक ग्रामीण क्षेत्र में और तीन नगरीय क्षेत्र में मौजूद है। विकाखण्ड स्तर पर कोयलसा एक मात्र विकासखण्ड है जहाँ तारघर की सुविधा उपलब्ध है।

पी0सी0ओ – अध्ययन क्षेत्र में पी0सी0ओ0 केन्द्रों की सबसे अधिक संख्या रानी की सराय (123) है। जनपद के 1209 ग्राम में पी0सी0ओ0 केन्द्रों की सुविधाएं उपलब्ध है। ग्राम में पी0सी0ओ0 की सुविधाओं वाले ग्रामों की संख्या सबसे अधिक विलरियागंज (88) में है जबकि सबसे कम संख्या अतरौलिया (30) विकासखण्ड में है।

टेलीफोन कनेक्शन –अध्ययन क्षेत्र में टेलीफोन कनेक्शनों की सबसे अधिक संख्या फूलपुर (1563) विकासखण्ड में मिलती है।

उपरोक्त संचार सेवाओं के अतिरिक्त जनपद आजगढ़ में अन्य संचार सेवाये जैसे– दूरदर्शन, केबिल टीवी, रेडियो एवं इंटरनेट कैफे की सुविधाएं उपलब्ध है। इस प्रकार की सुविधाओं का नगरीय क्षेत्र में वितरण अधिक मिलता है।

नगरीकरण –नगर प्राचीन काल से ही मानव सभ्यता के उत्थान एवं उत्कर्ष का प्रतीक रहे है। नगरीकरण के स्तर से अर्थव्यवस्था को मापने का काम भी किया जाता है। किसी दिये गये क्षेत्र या देश में निवासित लोगों का किसी नगद या नगरीय केन्द्र पर बसने या नगरीय जनसंख्या के रूप में परिवर्तित होने को नगरीकरण कहा जाता है। नगर मानव की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक गतिविधियों के केन्द्र तथा देश की सम्मपनता के दर्पण होते है। अपनी उच्च सेवाओं के बल पर नगर, ग्रामीण जनसंख्या के आकर्षण का केन्द्र होते है 14।

अध्ययन क्षेत्र जनपद आजमगढ़ में नगरीयकरण की प्रक्रिया धीमी रही है। वर्ष 1901 से 2001 तक के विभिन्न दशकों में नगरीय जनसंख्या में हुई वृद्धि।

अतः अवलोकन से स्पष्ट है कि जनपद की नगरीय जनसंख्या में विभिन्न दशकों में परिवर्तन हुआ है। जनपद की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत वर्ष 1901 में 5.9 से बढ़कर 7.5 प्रतिषत हो गयी है। जनपद की नगरीय जनसंख्या के प्रति दशक प्रतिशत का अन्तर वर्ष 1911 में 28.5 प्रतिशत रहा है। शेष वर्षो मे इसमें धनात्मक परिवर्तन हुए है। जनपद की नगरीय जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि वर्ष 1991 में (35.1 प्रतिशत) रही है।

स्पष्ट है कि जनपद में वर्ष 2001 की गणना के आधार पर नगरीय केन्द्रों की संख्या 15 है। इसमें सबसे अधिक जनसंख्या वाला नगर आजमगढ़ जनपद मुख्यालय है जबकि सबसे कम जनसंख्या वाला नगर हफीजपुर है। क्षेत्रफल के आधार पर जनपद का सबसे बड़ा नगर भी जनपद मुख्यालय आजमगढ़ है जबकि सबसे छोटा नगर इब्राहिमपुर है। जनसंख्या घनत्व की दृष्टि से सबसे बड़ा नगर भी आजमगढ़ है जबकि सबसे छोटा नगर फूलपुर (1508) है। साक्षर की दृष्टि से सबसे अधिक साक्षर व्यक्ति आजमगढ़ (82.24 प्रतिशत) में व सबसे कम इब्राहिमपुर (46.76 प्रतिशत) है। अध्ययन क्षेत्र में स्थित ये नगर विकास केन्द्र के रूप में कार्य करते हैं तथा जनपद के सामाजिक–आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तनों के केन्द्र भी है। ये नगर न केवल ग्रामीण क्षेत्रों को अपनी सेवाएं प्रदान करते है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों से प्राप्त खाद्यान्न, सब्जी, दूध, ईधन को नगरों में आवश्यक वितरण प्रणाली में शामिल करते है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ग्रीनवाल्ड, डी0 एवं अन्य, : डिक्शनरी ऑफ मार्डन इकोनॉमिक्स, मैकग्रा हिल, द्वितीय संस्करण, पृ0 297–298।
2. बरन, राम, (1986) : ग्रामीण विकास में परिवहन की भूमिका : एक प्रतिदर्शी अध्ययन , उत्तर भारत भूगोल पत्रिका, वा022, अंक 1, जून 1986।
3. पाठक, गणेश कुमार, (1980) : फैजाबाद–अयोध्या नगर के सन्दर्भ में नगरीय यातायात का भौगौलिक अध्ययन, कोशल, जनपद ऑफ दी इण्डियन सोसाइटी ऑफ अवध, फैजाबाद, अंक 2 सं0 1।

*****